सप्तम अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

शोध प्रबन्ध लिखने को प्रारंभ करने से पहले कुछ प्रश्न मन में उत्पन्न हो गये थे। शोध प्रबन्ध पूरा करते वक्त उन प्रश्नों का समाधान हो गया। उनको मैंने सात अध्यायों में बाँट कर प्रस्तुत किया है।

प्रथम अध्याय में प्रतीक शब्द का अर्थ, परिभाषाएँ तथा प्रतीक के महत्व पर संक्षेप में विचार किया है। प्रतीक किसी अगोचर वस्तु का प्रतिनिधि है। जब किसी वस्तु का कोई एक भाग पहले गोचर होता है, और फिर आगे उस वस्तु का ज्ञान होता है, तब उस भाग को प्रतीक कहते हैं। प्रतीक द्वारा अप्रस्तुत वस्तु का बोध या परिज्ञान कराया जाता है। प्रतीक किसी वस्तु विशेष या भाव समूहों का ऐसा संकेत है, जो अगोचर एवं अतींद्रिय है, जिसका केवल मस्तिष्क द्वारा अनुभव किया जाता है। इस अध्याय में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों की, 'प्रतीक' की परिभाषाओं को प्रस्तुत किया है। साथ ही साथ प्रतीक की महत्व प्रतिष्ठा की है। प्रतीक किसी भाव को कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक प्रकट कर देते हैं।

द्वितीय अध्याय में प्रतीक का उद्भव, प्रतीक नाटकों का स्वरूप, हिंदी नाट्य साहित्य में प्रतीक नाटकों का अभ्युदय, नाटकीय तत्वों की दृष्टि से प्रतीक नाटक और प्रतीक नाटकों का वर्गीकरण आदि विषयों का विवेचन किया है। हिंदी में प्रतीक नाटकों की परंपरा संस्कृत साहित्य से ही चली आ रही है। संस्कृत साहित्य में प्रतीकों का सर्वप्रथम प्रयोग अश्वघोष ने किया। फिर कृष्ण मिश्र रचित 'प्रबोध चंद्रोदय' अद्वितीय प्रतीक नाटक रहा। इसके बाद धीरे धीरे हिंदी नाट्य साहित्य में प्रतीक नाटकों का अभ्युदय हुआ। प्रतीक नाटकों के तत्व सामान्य नाटकों के तत्वों से थोड़े-से अलग और विशिष्ट दिखाई देते हैं। इस

अध्याय में, विविध विद्वानों द्वारा किया गया प्रतीकों का वर्गीकरण भी प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार पहले दो अध्यायों में मुझे मेरे पहले प्रश्न का उत्तर मिल गया।

तृतीय अध्याय में हिंदी के प्रतीक नाटकों के विकास की संक्षिप्त रुपरेखा प्रस्तुत की है। इसमें युगानुरूप प्रतीक नाटकों का संक्षिप्त परिचय दिया है। भारतेंदु पूर्व परंपरा के प्रतीक नाटकों में काव्यात्मक शैली दिखाई देती है। इन प्रतीक नाटकों में अमूर्त भावों के मानवीकरण की प्रवृत्ति विशेष रुप से लक्षित होती है। भारतेंदु युग से ही गद्य नाटकों का प्रारंभ हुआ। इस युग के नाट्य - साहित्य में राष्ट्रीयता एवं समाजसुधार के बारे में प्रतीकों का प्रयोग अधिक तर हुआ। प्रसाद युगीन नाटकों में प्राय: ऐतिहासिक और पौराणिक विषयों को लेकर, समसामयिक समस्याओं का चित्रण दिखाई देता है। प्रसादोत्तर युग के प्रतीक नाटकों में जहाँ एक ओर पुरानी परंपरा के प्रतीक नाटकों का अनुसरण हुआ, वहाँ दूसरी ओर सांकेतिक प्रतीक शैली का भी प्रयोग किया। स्वातंत्र्योत्तर काल में या छठे दशक में प्रतीक विधान की दृष्टि से नवीनतम साहित्य निर्माण हुआ।

चतुर्थ अध्याय में सातवें दशक के तथा परवर्ती काल के प्रतीक नाटकों का संक्षेप में विवरण दिया है। इस दशक में प्रतीक नाटक चरम सीमा पर पहुँच गया था। इस काल में डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल ने सर्वाधिक प्रतीक नाटक लिखकर ऐसे नाटकों को ऊँचे स्थान पर पहुँचाया। इस काल के प्रतीक नाटकों में, समाज की समस्याओं, वर्गविशेष की मनोवृत्तियों, व्यक्ति की उलझनों आदि को अपने अनुभवों के आधार पर सांकेतिक रुप से चित्रित करने का प्रयास हुआ है।

इस प्रकार तृतीय और चतुर्थ अध्याय में मुझे मेरे दूसरे प्रश्न का उत्तर मिल गया।

पंचम अध्याय में डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में पायी गयी प्रतीकात्मकता का विस्तृत विवेचन किया गया है। इसके लिए दस नाटक चुने हैं।

`अंधा कुआँ` भारतीय वैवाहिक पध्दति का प्रतीक है, जिसमें गिर जाने पर मुक्ति संभव नहीं होती।

`मादा कैक्टस` में नर-नारी के संबंध को, `कैक्टस` का प्रतीक रूप लेकर, उद्घाटित किया है।

`सूखा सरोवर` हमारे अंत:करण का प्रतीक है। जब इस अंत:करण में असत् का प्रवेश होता है तब जीवन रूपी सरोवर सूख जाता है। और सत् को अपनाने से यह सरोवर फिर भर जाता है।

`रक्त कमल` नवजागरण का प्रतीक है। नवजागरण, कठिन परिश्रम और बलिदान से ही राष्ट्र का निर्माण होता है।

`रातरानी` आदर्श स्त्री का प्रतीक है, जो अपने प्यार, त्याग और सेवा की भावना से पुरुषका जीवन खुशबूदार बनाती है।

`सुंदर रस` नैसर्गिक सौंदर्य की गरिमा को स्पष्ट करता है।

`दर्पन` निवृत्ति और प्रवृत्ति के बीच का द्वंद्व दिखाता है।

`सूर्यमुख` पौराणिक कथा लेकर आधुनिक युगबोध कराता है।

`मिस्टर अभिमन्यु` भारत की वर्तमान समाज व्यवस्था के अभेद्य चक्रव्यूह को संकेतित करता है।

`कर्फ्यू` मनुष्य के भीतरी कर्फ्यू को उजागर करता है।

इस प्रकार इस अध्याय में मेरे तीसरे प्रश्न का उत्तर मुझे मिल गया।

छठे अध्याय में प्रतीक नाटकों की मंचीयता स्पष्ट की है। मंचसज्जा, रूपसज्जा, प्रकाश व्यवस्था और संगीत आदि रंगमंच के उपकरणों पर प्रकाश डालकर, इन्हीं उपकरणों के आधार पर डॉ.लाल के प्रतीक नाटकों की मंचीयता स्पष्ट की है। कुछ दृश्य ऐसे होते हैं जो रंगमंच पर दिखा नहीं सकते। ऐसे दृश्यों को,

पृष्ठभूमि से ध्वनि के द्वारा या संभाषण के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। कुछ भाव ऐसे होते हैं जो मात्र संभाषण से स्पष्ट नहीं होते, उनकी सशक्त अभिव्यक्ति के लिए संगीत और प्रकाश का उपयोग किया जाता है। इससे नाटक और प्रभावी बन जाता है।